परविार की देखभाल के लयि बुज़ुर्गों को करना पड़ता है समझौता : अध्ययन

संदर्भ

संयुक्त राष्ट्र के ऐजवेल रसिर्च एंड एडवोकेसी सेंटर (Agewell Research and Advocacy Centre for the United Nations) द्वारा कयि गए हालयि अध्ययन में पाया गया है कि अधिकांश बुज़ुर्गों को परविार के सदस्यों द्वारा देखभाल और सहायता कयि जाने के संबंध में अपने जीवन की परस्थितियों से समझौता करना पड़ता है और उनमें से 50% से अधकि बुज़ुर्गों को उपेक्षा और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। यह सर्वेक्षण भारत के 20 राज्यों में मई-जून 2018 में कयिा गया था।

अध्ययन के महत्त्वपूर्ण बदि

- 10,000 वरषि्ठ नागरकिों पर कयि गए सर्वेक्षण रपिोर्ट में कहा गया है कि बुज़ुर्गों में से 66.5% परविार के युवा सदस्यों की तेज़ी से वकिसति जीवन-शैली को सबसे बड़ी चुनौती मानते हैं| जब उनसे पूछा गया कि बुढ़ापे में उनकी खराब वत्तिीय स्थिति एक बड़ी रुकावट साबति हुई है, तो उनमें से 60% ने इस बात को सही माना।
- अध्ययन में यह भी पता चला है कि 52.4% उत्तरदाताओं (बुज़ुर्गों) ने उपेक्षा, दुर्व्यवहार या उत्पीड़न का सामना कयिा था।
- इनमें 60-70 आयु वर्ग के 56.2%, 71-80 आयु वर्ग के 30.2% और शेष 81 से अधकि आयु वर्ग के 13.7% बुज़ुर्ग शामलि थे।

स्वतंत्र रूप से जीवन यापन

- अध्ययन से पता चला है कि चार वरषि्ठ नागरकिों में से एक यानी 23.44% अकेले रह रहे थे, जबकि दो में से एक यानी 48.88% अपने पति/ पत्नी के साथ रह रहे थे।
- केवल 26.5% बुज़ुर्ग अपने बच्चों या परविार के अन्य सदस्यों के साथ रह रहे थे। ग्रामीण क्षेत्रों के 21.8% की तुलना में शहरी क्षेत्रों में अकेले रहने वाले बुज़ुर्गों का प्रतशित 25.3% था।
- सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि बड़ी संख्या में बुज़ुर्गों को अकेले रहना या केवल पति/ पत्नी के साथ रहना पसंद है।
- एक ही घर में अपने बच्चों के परविार के साथ रहते हुए भी कई वरषि्ठ नागरकिों के रहने का स्थान / कमरा / मंजलि और रसोईघर आदि अलग थे। वे शायद ही कभी अपने बच्चों या परविार के सदस्यों से बातचीत कर पाते थे और इसलयि वे अकेले रहने की बात स्वीकार करते हैं|
- सर्वेक्षण में यह भी पता चला कि अधिकांश बुज़ुर्गों ने अपनी आज़ादी का आनंद लयिा, लेकनि उनमें से अनेक बुढ़ापे में आर्थकि रूप से दूसरों पर नरि्भर थे। केवल 36.81% ने बताया कि वे अपने जीवन के अंतमि समय में आर्थकि रूप से आत्मनरि्भर हैं।
- सर्वेक्षण में पता चला कि लगभग 68.24% बुज़ुर्गों ने वैचारकि स्वतंत्रता, 60.54% ने मनोवैज्ञानकि आज़ादी, 69.45% ने सामाजकि आज़ादी और 61.81% ने शारीरकि आज़ादी का आनंद लयिा।
- लगभग 88.5% बुज़ुर्गों ने कहा कि वृद्धावस्था में आत्मनरि्भरता सुनश्चिति करने के लयि उन्हें स्वास्थ्य सेवा की आवश्यकता है। इसी तरह, लगभग 74.1% ने सोशल सपोर्ट ससि्टम और मनोरंजक सुवधिाओं की आवश्यकता पर बल दयिा ताकि वे और अधकि सुखद जीवन जी सकें।
- सर्वेक्षण में कहा गया है कि ये चुनौतयिाँ अक्सर भेदभाव बढाने में कैसे योगदान देती हैं। लगभग 54% बुज़ुर्गों ने कहा कि उन्हें उम्र के कारण भेदभाव का सामना करना पड़ा।
- 52.4% ने कहा कि उन्हें पारंपरकि पारविारकि समर्थन की आवश्यकता है, जबकि 29% ने अपने बुढ़ापे की आवश्यकताओं को पूरा करने के लयि भरण-पोषण की मांग की और 13.9% ने बुढ़ापे में बेहतर स्वास्थ्य देखभाल सुवधिाएँ प्रदान करने वाली सेवाओं की मांग की।
- लगभग 4.4% बुज़ुर्गों ने आवास और परामर्श जैसी सबसे महत्त्वपूर्ण ज़रूरतों को पूरा करने की आवश्यकता पर भी बात की।

योजनाओं से अनजान

- अध्ययन के दौरान बुज़ुर्गों में से कई को नीतगित ढाँचे और उनके लयि उपलब्ध सहायता और सेवाओं की स्थिति के बारे में अनजान पाया गया। केवल 28.6% ही उनके भरण-पोषण से संबंधति कानूनों और योजनाओं से अवगत थे, जबकि बाकी को उनके लयि आवश्यक प्रावधानों या योजनाओं के बारे में बहुत कम या कोई ज्ञान नहीं था।
- यह देखते हुए कि हर बुज़ुर्ग का आर्थकि रूप से स्वतंत्र होना आवश्यक है, अध्ययन में सफिारशि की गई है कि "वृद्धावस्था में आत्मनरि्भरता सुनश्चिति करने और दीर्घकालकि देखभाल की व्यवस्था पारविारकि, सामुदायकि और सरकारी सभी स्तरों पर की जानी चहयि।
- अध्ययन में कहा गया है कि बुज़ुर्गों को दीर्घकालकि देखभाल सुवधिा प्रदान करना भारत में पारविारकि ज़म्मिेदारयिों के तहत आता है| यह देखा गया है कि वे वरषि्ठ नागरकि जो वत्तिीय रूप से आत्मनरि्भर हैं और जनिके पास संपत्ति या संपत्ति का अधकिार है, उनके परविार द्वारा तुलनात्मक रूप से बेहतर व्यवहार कयिा जाता है|

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/elders-compromise-for-sake-of-cere-from-family